उन लोगों की भाषा और प्रक्रिया सब असबंद्ध होए बिना किसी काव्य कल्पना के अंधेर नगरी का प्रहसन खेल

Vandana[1] Dr. Ishwar Singh[2]

[1]Research Scholar, CMJ University, Shillong

[2]Rtd. Associate Professor, Govt. P.G. College, Narnaul

----------♦----------

परिचय

अंधेर नगरी अनबूझ राजा। टका सेर भाजी टका सेर खाजा॥
नीच ऊँच सब एकहि ऐसे। जैसे भड़ुए पंडित तैसे॥
कुल मरजाद न मान बड़ाई। सबैं एक से लोग लुगाई॥
जात पाॅंत पूछै नहिं कोई। हरि को भजे सो हरि को होई॥
वेश्या जोरू एक समाना। बकरी गऊ एक करि जाना॥
सांचे मारे मारे डाल। छली दुष्ट सिर चढ़ि चढ़ि बोलैं॥
प्रगट सभ्य अन्तर छलहारी। सोइ राजसभा बलभारी ॥
सांच कहैं ते पनही खावैं। झूठे बहुविधि पदवी पावै ॥
छलियन के एका के आगे। लाख कहौ एकहु नहिं लागे ॥
भीतर होइ मलिन की कारो। चहिये बाहर रंग चटकारो ॥
धर्म अधर्म एक दरसाई। राजा करै सो न्याव सदाई ॥
भीतर स्वाहा बाहर सादे। राज करहिं अमले अरु प्यादे ॥
अंधाधुंध मच्यौ सब देसा। मानहुॅं राजा रहत बिदेसा ॥
गो द्विज श्रुति आदर नहिं होई। मानहुॅं नृपति बिधर्मी कोई ॥
ऊँच नीच सब एकहि सारा। मानहुॅं ब्रहम ज्ञान बिस्तारा ॥
अंधेर नगरी अनबूझ राजा। टका सेर भाजी टका सेर खाजा ॥

साहित्य की समीक्षा

गुरु जी ने हमको नाहक यहाँ रहने को मना किया था। माना कि देस बहुत बुरा है। पर अपना क्या? अपने किसी राजकाज में थोड़े हैं कि कुछ डर है, रोज मिठाई चाभना, मजे में आनन्द से राम-भजन करना।
(मिठाई खाता है)

(चार प्यादे चार ओर से आ कर उस को पकड़ लेते हैं): चल बे चल, बहुत मिठाई खा कर मुटाया है। आज पूरी हो गई।बाबा जी चलिए, नमोनारायण कीजिए (घबड़ा कर) हैं! यह आफत कहाॅं से आई! अरे भाई, मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है जो मुझको पकड़ते हौ।

सामग्री और विधि

1. प्या. : आप ने बिगाड़ा है या बनाया है इस से क्या मतलब, अब चलिए। फाॅंसी चढ़िए। गो. दा. : फाँसी। अरे बाप रे बाप फाँसी!! मैंने किस की जमा लूटी है कि मुझ को फाँसी! मैंने किस के प्राण मारे कि मुझ को फाँसी!
2. प्या. : आप बड़े मोटे हैं, इस वास्ते फाँसी होती है।
गो. दा. : मोटे होने से फाँसी? यह कहां का न्याय है! अरे, हंसी फकीरों से नहीं करनी होती।
1. प्या. : जब सूली चढ़ लीजिएगा तब मालूम होगा कि हंसी है कि सच। सीधी राह से चलते हौ कि घसीट कर ले चलें?
गो. दा. : अरे बाबा, क्यों बेकसूर का प्राण मारते हौ? भगवान के यहाँ क्या जवाब दोगे?
1. प्या. : भगवान् को जवाब राजा देगा। हम को क्या मतलब। हम तो हुक्मी बन्दे हैं।
गो. दा. : तब भी बाबा बात क्या है कि हम फकीर आदमी को नाहक फाँसी देते हौ?
1. प्या. : बात है कि कल कोतवाल को फाँसी का हुकुम हुआ था। जब फाँसी देने को उस को ले गए, तो फाँसी का फंदा बड़ा हुआ, क्योंकि कोतवाल साहब दुबले हैं। हम लोगों ने महाराज से अर्ज किया, इस पर हुक्म हुआ कि एक मोटा आदमी पकड़ कर फाँसी दे दो, क्योंकि बकरी मारने के अपराध में किसी न किसी की सजा होनी जरूर है, नहीं तो

न्याव न होगा। इसी वास्ते तुम को ले जाते हैं कि कोतवाल के बदले तुमको फाँसी दें।

गो. दा. : तो क्या और कोई मोटा आदमी इस नगर भर में नहीं मिलता जो मुझ अनाथ फकीर को फाँसी देते हैं!

सारांश

1. प्या. : इस में दो बात है-एक तो नगर भर में राजा के न्याव के डर से कोई मुटाता ही नहीं, दूसरे और किसी को पकड़ैं तो वह न जानैं क्या बात बनावै कि हमी लोगों के सिर कहीं न घहराय और फिर इस राज में साधु महात्मा इन्हीं लोगों की तो दुर्दशा है, इस से तुम्हीं को फाँसी देंगे।

गो. दा. : दुहाई परमेश्वर की, अरे मैं नाहक मारा जाता हूँ! अरे यहाँ बड़ा ही अन्धेर है, अरे गुरु जी महाराज का कहा मैंने न माना उस का फल मुझ को भोगना पड़ा। गुरु जी कहां हौ! आओ, मेरे प्राण बचाओ, अरे मैं बेअपराध मारा जाता हूँ गुरु जी गुरु जी- (गोबर्धन दास चिल्लाता है, प्यादे लोग उस को पकड़ कर ले जाते हैं)

(पटाक्षेप)

संदर्भ ग्रथं

अरविन्द तिवारी : दीया तले अंधेरा, प्रतिभा प्रतिष्ठान, नेता जी मार्ग, नई दिल्ली – 1997

उषा यादव : कितने नीलकंठ, आत्माराम एंड संस, दिल्ली – 1998

उषा यादव : धूप का टुकड़ा, आत्माराम एण्ड सन्स प्रकाशन, दिल्ली–1995

उषा यादव : आंखों का आकाश, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली – 1995

कृष्णा अग्निहोत्री : टपरेवाले, साहित्य भारती प्रकाशन, कृष्ण नगर, नई दिल्ली, प्र॰ सं॰ – 1998

प्रो॰ के॰ एल॰ कमल : स्वातन्त्र्योत्तर भारत : विश्वासघात, पंचशील प्रकाशन, जयपुर – 2005

खड़क सिंह रावत : सत्ता के केन्द्र, कमल नन्दा, इन्दिरा नगर, लखनऊ, प्र॰ सं॰ – 2005

गुरुदत्त : यात्रा का अन्त, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली, प्र॰ सं॰ – 1973

दीपचन्द्र निर्मोही : और कितने अंधेरे, श्याम पुस्तक सदन, केशव पुरम, दिल्ली – 1995

दूधनाथ सिंह : आखिरी कलाम, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली – 2003

देवेश ठाकुर : अपना–अपना आकाश, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र॰ सं॰ – 1984

धीरेन्द्र अस्थाना : समय एक शब्द भर नहीं है, राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली – 1981

नरेन्द्र कोहली : अभिज्ञान, राजपाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली – 2000

नरेन्द्र कोहली : अंतराल (महासमर – 5), वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली – 2000

नरेन्द्र कोहली : अधिकार (महासमर – 2), वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्र॰ सं॰ – 1991

निर्मल वर्मा : रात का रिपोर्टर, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली, प्र॰ सं॰ – 1989

पंकज बिष्ट : लेकिन दरवाजा, राधा कृष्ण प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली – 1996

प्रदीप पंत : महामहिम, राजकमल प्रकाशन प्रा॰ लि॰, दिल्ली, प्र॰ सं॰ – 1980

बालशौरि रेड्डी : कालचक्र, आलेख प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र॰ सं॰ – 2002

बालशौरि रेड्डी : दावानल, स्मृति प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र॰ सं॰ – 1979

मनमोहन सहगल : समझौते से पहले, राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली, प्र॰ सं॰ – 2003

मैत्रेयी पुष्पा : विजन, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्र॰ सं॰ – 2002

मैत्रेयी पुष्पा : अगनपाखी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र॰ सं॰ – 2001

मैत्रेयी पुष्पा : झूलानट, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र॰ सं॰ – 1999

यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' : हजार घोड़ों का सवार, शारदा प्रकाशन, दिल्ली, प्र॰ सं॰ – 1981